भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर -2026-27

कक्षा-10	विभाग: हिंदी	दिनांक -16.03.26
QB	साखी-कबीरदास	Write the Q&A in your Hindi Note Book.

नाम: ____________________ अनुभाग: ____________ अनुक्रमांक: _______________

1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है? / कबीर ने मीठी वाणी का क्या महत्त्व बताया है ?

उत्तर:- कबीर कहते हैं कि हमें मीठी वाणी बोलनी चाहिए l मीठी वाणी बोलने से मन का अहंकार दूर हो जाता है, तन को शीतलता मिलती है l सुनने वालों को भी सुख प्राप्त होता है l मधुर वाणी से सुननेवाले व्यक्ति को प्रभावित कर असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता हैl मीठी वाणी के प्रभाव से शत्रुता और ईर्ष्या की भावना दूर हो जाती है l

2. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते? /कस्तूरी मृग का उदाहरण देकर कबीर ने क्या समझाया है ?

उत्तर:- जिस प्रकार मृग की नाभि में कस्तूरी स्थित रहती है किंतु मृग इस तथ्य को जानता नहीं और इस सुगंध को जंगल में ढूँढता फिरता है , उसी प्रकार ईश्वर कण-कण में व्याप्त हैं ,मनुष्य के दिल में वास करते हैं पर मनुष्य उसे मंदिर ,मस्जिद, गुरुद्वारे या अन्य तीर्थों पर खोजता फिरता है। मनुष्य अहंकारी और अज्ञानी होने के कारण ईश्वर को देख नहीं पाता।

3. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए l

उत्तर:- कबीर दास के अनुसार अहंकारी व्यक्ति को ईश्वर प्राप्ति नहीं हो सकती क्योंकि अहंकारी स्वयं को सर्वोपरि मानता है परंतु जब उसके मन में ज्ञान रुपी दीपक का प्रकाश फैलता है तब अहंकार रुपी अँधकार दूर हो जाता है।उसके मन के सारे भ्रम , क्लेश , संदेह व परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं।यहाँ दीपक, ईश्वर ज्ञान का प्रतीक है और अँधकार अहंकार/अज्ञान का प्रतीक है ।

4.संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं?

उत्तर:- संसार में सुखी वे हैं जो ईश्वर को भूलकर सांसारिक सुखों में डूबे हुए हों l ये खाते हैं और सोते हैं अर्थात मोह-माया में लिप्त होकर जीवन बिताते हैं l

दुखी वे हैं जो मोह-माया में फँसे लोगों को देखकर चिंतित हैं ,ये दिन-रात ईश्वर से मिलने के लिए जागते हैं l ये इस बात से परिचित हैं कि संसार नश्वर है और ईश्वर ही सत्य है l 'सोना' का आशय है – ईश्वर के प्रति उदासीन होना l 'जागना' का आशय है –ईश्वर के प्रति आस्थावान होनाl

5.ईश्वर से अलग होने पर भक्त की स्थिति कैसी हो जाती है?

उत्तर:- कबीर दास कहते हैं कि जिस मनुष्य के तन-मन को विरह(ईश्वर से अलग होना)रूपी साँप ने घेर लिया है, उस पर किसी भी मंत्र का असर नहीं होता । उसी प्रकार ईश्वर के वियोग में मनुष्य जी नहीं सकता , अगर जीता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है ।

6. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है? /कवि ने निंदक को अपने पास रखने की सलाह क्यों दी है ?

उत्तर:- कबीर दास कहते हैं कि निंदक को अपने घर के आँगन में झोंपड़ी बनाकर उसमें रखना चाहिए । निंदक हमारा हितैषी होता है क्योंकि वह अपनी आलोचनाओं से हमें हमारी बुराइयों का ज्ञान कराता है और हम उन बुराइयों को दूर कर लेते हैं । इस प्रकार निंदक बिना पानी और साबुन के ही हमारे स्वभाव को निर्मल कर देता है ।

7. 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होई' – इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है? /कबीर ने पंडित किसे कहा है?

उत्तर:- कवि कहना चाहते हैं कि ईश्वर ही सर्वस्व है । वे ही जीवन के केंद्र हैं अर्थात् ईश्वर को पढ़ लेना ही पर्याप्त है। बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ कर कोई पंडित नहीं बन जाता। केवल परमात्मा को जानने वाला ही सच्चा ज्ञानी और पंडित है। हमें अपने मन को सांसारिक मोह-माया से हटा कर ईश्वर भक्ति में लगाना है।

8.कवि ने अपना घर क्यों जला दिया? घर और मुराडा किसके प्रतीक हैं ?

उत्तर:- कबीर दास जी कहते हैं कि उन्होंने मुराडा हाथ में लेकर अपना घर जला दिया है अर्थात उन्होंने ईश्वर ज्ञान प्राप्त कर सांसारिक सुखों से मुक्ति पा ली है । अभी वे उसका घर जलाएँगे , जो उनके साथ चलने को तैयार है अर्थात वे ईश्वर ज्ञान के माध्यम से उसको भी मोह-माया से मुक्त कराएँगे । यहाँ घर, सांसारिक सुखों का प्रतीक है और मुराडा, ईश्वर ज्ञान का । सांसारिक सुखों को त्यागने से ही ईश्वर- प्राप्ति हो सकती है ।

9. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर:- कबीर की भाषा सरल और सहज है । कबीर के द्वारा रचित साखियों में पूर्वी हिंदी, अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओँ का मिश्रण है । इसी कारण इनकी भाषा को 'पचमेल खिचड़ी' कहा जाता है । कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' भी कहा जाता है । कबीर भाषा का मनमाना प्रयोग करते थे । वे भाषा को जानबूझकर सँवारने का प्रयास नहीं करते । वे जैसा बोलते थे ,वैसा ही लिखते थे । उन्होंने जनचेतना और जनभावनाओं को अपने साखियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया । कबीर को वाणी का डिक्टेटर भी कहा जाता है ।